TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4407**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥ श्रीमानतुंगसूर्याचार्य आदिनाथना चैत्यनी स्तवना करइ छइ भक्तिनिधि नमनयती सातरा ज्ञातिधी विमाननी देवतानी प्रभा प्रत्यानी प्रभा मणिमुगट तीर्थराजेरतन तीर्थनी कांति दीप्यावाण दार करता । उद्योतना करणहार तेहना । बंतना करणहार दोषकारी देवतानामुगट रत्न । हरणहार पाप हणनारी नरनां अंधकारना समूह जिनने ॥ नली भक्ता वंदन नमस्कार करीनइ ।

॥ ऐं नमः ॥ भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणां । उद्योतकं दलितपापतमोवितानं । सम्यक्प्रण

जिनना आदिनाथ कारण युगमइ पितरणयुग ... गना आदि तीर्थंकर ... । भवरूप समुद्र आलंबन पडता संसार समुद्र पडता जीवनइ आलंबन ... आधार ... नबला ॥ जिके स्तव्य आदि नाथ संस्तव ... स्तवन करना कारणादि । ज्ञान जेहनइ परमार्थ तेहनइ ज्ञान रूप बुद्धि ...

म्य जिनपादयुगं युगादा । वालंबनं भवजले पततां जनानां ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मय

तत्त्वमाला प्रभा ... ॥ सुरलोक देवलोकना स्वामी जे इंद्र महाराज सर्व देवताना ... बुद्धि ... ॥ करी स्तव्या ... स्तोत्र करी नइ । स्तोत्र केहवे तीन भुवन स्वर्ग लोक ... उदार ॥ किल इति सत्ये ...

तत्त्वबोधा । दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः । स्तोष्ये कि

पहिला संसार ... पहिला तीर्थंकर । श्री आदिनाथ ... ॥ बुद्धि विना पिण हे देवतायइ पूजित पादपीठ ... तीर्थंकर ... ॥ स्तवीवा भणी समुद्यत ... ॥

लाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रं ॥ युग्मं ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ । स्तोतुं समुद्यत । 1

[illegible]

मतिर्विगतत्रपोऽहं। बालं विहाय जलसंस्थितमिंदुबिंबं। मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥३॥

[illegible]

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्। कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोपि बुद्ध्या। कल्पांतकाल

[illegible]

पवनोद्धतनक्रचक्रं। को वा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्यां ॥४॥ सोहं तथापि तव भक्तिवशान्मु

[illegible]

नीश। कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः। प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेंद्रं। नाभ्येति किं

[illegible]

निजशिशोः परिपालनार्थं ॥५॥ अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम। त्वद्भक्तिरेव मुखरीकु

[illegible]

रुते बलान्मां। यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति। तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहे

[illegible]

तुः ॥६॥ त्वत्संस्तवेन भवसंततिसंनिबद्धं। पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां। आक्रां

[illegible]

तलोकमलिनीलमशेषमाशु। सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारं ॥७॥ मत्वेति नाथ तव 2

[illegible]

संस्तवनं मयेद मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु । मु

[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]

क्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥८॥ आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं । त्वत्संकथा

[illegible]

पि जगतां दुरितानि हंति । दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्रभैव । पद्माकरेषु जलजानि विका

॥ ९ ॥ [illegible]

सभांजि ॥९॥ नात्यद्भुतं भुवनभूषण भूतनाथ । भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंत । तु २

[illegible]

ल्या भवंति भवतो ननु तेन किं वा । भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ॥१०॥ दृष्ट्वा भवंतमनिमेषवि

[illegible]

लोकनीयं । नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशिकरद्युति दुग्धसिंधोः । क्षारं

[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]

जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ॥११॥ यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं । निर्मापितस्त्रिभु

[illegible]

वनैकललामभूत । तावंत एव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां । यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥१२॥ 3

हेनाथ स्वामी तुहारउ | जे देवता मनुष्य नागकुमार || समस्त जीता छइ तीनभुवननां सर्व उपमानवस्तु || चंद्रमानउ बिंब कलंकइं
मुखकमल किहां | स्त्रीनां नयननउ हरणहार | उपमान जीत्यइ | एहवउ तुहारउ मुख छइ | तीन करी मइलउ | किहां चंद्रमानो
तउ पाखइं | भुवनमइं उपमा नथी || बलीचंद्रमा केहवउ

वक्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि | निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानं | बिंबं कलंकमलिनं क्व

मांहि मलिन छइ किहां शशि | जिको | दिवसनइं विषइ थायइ | धवला पान || १३ || पूरउ छइ मांडलउ जीयइं तउ एहवो जे चंद्रमा तीं
सरीखउ छइ | सरीखउ चंद्रमंडलतिणी विशेष अधिको | यइ कला तेहनउ समूह तिणइ करी सोभइ छइ
पुण्यचंद्रमा सोभइ

निशाकरस्य | यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पं ||१३|| संपूर्णमंडलशशांककलाकला

वारा गुण तेहनी परइ | तीन भुवनां लांघइ छइ ताहरा | जिके एक तीन भुवननउ धणी परमेश्वर तेहनइं | तीयां गुणांनइं कोण
महाधवल उज्जल सो | घइ तीनभुवनमइं विस्तरया छइ || आश्रित गुण छइ अनेक गुण रहइ सर्व छइ || निवारइ फिरतानइं
लइ | आपणी इच्छायइ

प शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लंघयंति | ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं | कस्तान्निवार

कोइ स्वामीनइं धरावइ आ || १४ | इंद्राणीआं चरित्र किसो जेताहर रूप देवांगनायइं | मन थिर धारवो नउ पिण विकारमार्गइं नी
पणी इच्छाइं सेवक फिरइ पहुंचा || || संतोषनपाम्यो किंतु पाम्यो संतोष सुसी थयो || तेकुंण हतां न पूजा वाम्यो समवंत रीमन नि
रइ कोइ नहीं || विकार रूपो विस्मय नहीं ||

यति संचरतो यथेष्टं ||१४|| चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि | नींतं मनागपि मनो न वि

३

देवांगना देवीमन | नकरइ || कल्पांतकालनइ वायरइं चलाय्या छइ पर्वत || मेरुपर्वतनउ शिखर चलाइं जइ किवारइं सीकाय पिण कि || १५ ||
मार्ग विकार तन | जीयइं वायरइं | इसौ जोरावर वायरउ तीयइं करी || वारइ चलाइं अइ नहीं तिम लगावंतरउ मनमहा निश्चल
इ नहीं | इछा हठ | नइ किंसु | लज्जा णि घउ | देवांगना देवी चलइ नहीं ||

कारमार्गं | कल्पांतकालमरुता चलिताचलेन | किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ||१५||

नहीं छइ धूम सरीखउ बत्ती पात्र वर्जित जिहां | कृत्स्नं कहतां | तीन भुवन तीयइ प्रगट करइ छइ | तेहीवउ बलो गम्य नहीं सुक्रावीन
हरओ जोइ सनेह पूरीयउ तेल नउ सरजीयइ | समस्त || ज्ञान रूपइ करी केवलग्यांन तीयइ करी | सकीयइ नहीं किवारइं कहीयइ
पडवउ | वायरइ || वायुर उकेरवउ छइ

निर्धूमवर्त्तिरपवर्ज्जिततैलपूरः | कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि | गम्यो न जातु मरुतां

कंपाव्या चला याछइ अ | हे नाथ तू दीवउ अनेर उ छइ | केद व उ छइ उंचो | जगत्र नै || १६ हे नाथ तूं सर्व कदीयइ | अस्त आथइ नहीं | आथ
चलयर्व तिणइ करी मरु | विषइ प्रकाशनउ करणहार | बीजउ दीवउ एक इ आइ मा | मइ नहीं | राहु ग्रह तूं पिण तो नइ ग्रहइ सकइ नहीं
रूपी या वायु रा छइ || प्रकाश करइ | ते तीनभुवनमा देश प्रकाश करइ अधिक दीप || बीजइ सूर्यनइं तिणनइं राहु गिलइ छइ ||

चलिताचलानां | दीपोपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ||१६|| नास्तं कदाचिदुपयासि न रा

अन्य दर्शनइ | प्रगट करइ छइ उतावल उ समकाल इतीनभुवन | कालोधर कहीयइ मेघ | तेहनउ उदर पेट | तेणइ रुंध्यो | चंद्र जी केहवउ
पीयाराइ तेतो | उतइ | केवलग्यांनइ करीनइ | वली उपमा दीजइ | आच्छादयउ नहीं | महाप्रभाव जेहनउ एहवउ तूं सूर्य | जगत सूर्य
नेपरान चैवर्धी | तेज प्रकाशनउ करणहार || कंथकार को इस्यो करणहार जो तेहरी दीपतउ || की आति शायि

हुगम्यः | स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति | नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः | सूर्याति

4

करतां अधिक महिमावंत। देवगुं मीधा लोके ॥ ॥१७। निरंतर उदय छै। कीधो मोहरूपीयउ। राहु ना मुख नै [illegible]
[illegible] महिमावं। माहे हुं समान। अंधकार [illegible] गम्य [illegible]
[illegible] उछै ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥१७॥ नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं। गम्यं न राहुवदनस्य

[illegible] विशेषइ दीपइ। देवगुं मुखरूपीयउ कमल। [illegible] विद्योतयत [illegible] जगत विश्व लोक [illegible]
[illegible] कांतिसहित। [illegible] लीक। [illegible] चंद्रमा नो बिंब [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

न वारिदानां। विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति। विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबं ॥१८॥

१८। किस उका न राते चंद्रमा। [illegible] दिवस नइ विषइ। देवगुं मुखरूपीयइ चंद्रमाइं [illegible] हेवउ [illegible] नीपने
॥ सूर्य किसो काम अथवा। सूर्य सुं किसुं काम छइ॥ [illegible] अंधकार। पापरूपीयउ अंधकार [illegible] शालिवन [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

॥ किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा। युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ। निष्पन्नशालि

[illegible] जीवलोक मध्ये। कार्य केतलुं [illegible] सारइ करी नीचा नमता मेघे ॥ १९। [illegible] ज्ञान [illegible]
[illegible] लोक मध्ये॥ [illegible] ॥ [illegible] निर्मल [illegible]

वनशालिनि जीवलोके। कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥१९॥ ज्ञानं यथा त्वयि

[illegible] ॥१॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] हरिहरादिक नायक नइ विषइ [illegible] ॥ [illegible] ॥

विभाति कृतावकाशं। नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु। तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा मह

[illegible] ॥२०॥ [illegible] देव [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥

॥श्री आदेवजी [illegible]

त्वं। नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि ॥२०॥ मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा। दृष्टेषु येषु

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विषइ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

हृदयं त्वयि तोषमेति। किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः। कश्चिन्मनो हरति नाथ भवां

[illegible] ॥ २१॥ स्त्रीयां [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥

तरेपि ॥२१॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्। नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता। सर्वा

[illegible] ॥ २२ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं। प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालं ॥२२॥ त्वामामनंति मुन

5

परमंपुमांसः। मादित्यवर्णममलंतमसःपरस्तात्। त्वामेवसम्यगुपलभ्यजयंतिमृत्युं। नान्यःशिवःशि

वपदस्यमुनींद्रपंथाः॥२३॥ त्वामव्ययंविभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं। ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनंगके

तुं। योगीश्वरंविदितयोगमनेकमेकं। ज्ञानस्वरूपममलंप्रवदंतिसंतः॥२४॥ बुद्धस्त्वमेवविबु

धार्चितबुद्धिबोधात्। त्वंशंकरोसिभुवनत्रयशंकरत्वात्। धातासिधीरशिवमार्गविधेर्विधा

नात्। व्यक्तंत्वमेवभगवन्पुरुषोत्तमोसि॥२५॥ तुभ्यंनमस्त्रिभुवनार्तिहरायनाथ। तुभ्यंन ५

मःक्षितितलामलभूषणाय। तुभ्यंनमस्त्रिजगतःपरमेश्वराय। तुभ्यंनमोजिनभवोदधिशोषणाय॥

॥२६॥ कोविस्मयोत्रयदिनामगुणैरशेषैः। स्त्वंसंश्रितोनिरवकाशतयामुनीश। दोषैरुपात्तवि

विधाश्रयजातगर्वैः। स्वप्नांतरेपिनकदाचिदपीक्षितोसि॥२७॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयू

खमाभातिरूपममलंभवतोनितांतं। स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं। बिंबंरवेरिवपयोध 6

तसरीरेतपासे सोलइइ इसी रार्थ्य १॥ ॥२८॥ सिंहासननइविषइ मरतनामा कांतिनीशिखावाइ नामा प्रकारवर्णइड श्रीआत सोनाइमयंन सुमेरुहइ ॥ बिंबो स्वइइवइहइ मासरइ सरीर॥ सोनानीपरइनिरमलउ दीतमालएइवउ॥ आदइ उत्तर्य

रपार्श्ववर्त्तिः॥२८॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे विभ्राजते तव वपुः कनकावदातं बिंबं

उगाकाशनइविषइविलसतीसइकांति हूपलतानउसमूह ऊीयइनउ॥ ॥ ऊंचउ उदयाचलनामपर्वतनइविषइ ऊिमसूरिज रवेदीप्यइसूर्यनीपरी प्रीतनववर्ण नउसरीरसोभइइ ॥ मादलउ उदयाचलऊपरसूर्य सोहतिमसिंहासन॥ ॥२९॥ मचकुंदनाफूलनीपरइऊजु आचपलजेचामरतीयांनीसु सोहइ सोनाजीयइ इउवें

वियद्विलसदंशुलतावितानं तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः॥२९॥ कुंदावदातचलचा।

बिकुंपासेसाता यमानदीपइ ॥ विसरवइस्यसंत दीपइताकरउम नीरपरवीकांति॥ सोनानीपरइमनोहरवे पीतवर्णइइसरीर॥ आगतउऊंचउ मालेरुनीपरइनिर्मलजेनीझरणा नवपालीतेहनीधारजीयइइइविषइ॥ ॥ एहवउऊंचउ तटमेरुनउ

मरचारुशोभं विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतं उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधारमुच्चैस्तटं

छिमसोभइ सोनउतीयइसबे धीयउ ॥३०॥ तीनछत्रमस्तकरइविषइसोभइ ऊइइस्वेश्री आदिनाथ॥ ॥ चंद्रमानीपरइमनोह रसुदामणाउंचा मस्तकनइविषइरह्यांलइइांकी वइसूरिजनाकिरणनउ

सुरगिरेरिव शातकौंभं॥३०॥ छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांतमुच्चैः स्थितं स्थगितभानु ६

ताबक्उजीयइ रउइसउसूरैः ॥ मोतीयांनउसमूहतीयांरीजालकरीविशाल पणइवधताइइसोनाजेस्नी॥ कइतांधकालोकांमइसीनभुवननउपरमेश्वरपणो तीनछत्रतीनभुवननीठकुराइकहतांथकांताइरइ ॥३१॥ उदनसितापि कस्वरपका

करप्रतापं मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं प्रख्यापयत्त्रिजगतः परमेश्वरत्वं॥३१॥ उन्निद्र

सोनइरानवकमलनउजेसमूह तीयइरीकांतिजीयांरइ॥ ॥ समस्तपणइऊलसतीनखांरीकांतिनीयांरीजे ॥ शिखातीयइकरीनइ मनवउहरणहार ॥ ॥ चरणधरइपगलाताइ ऊितासामान्यकेवलीतिहांमारेइंइ — दितीर्थंकरधरइ॥

हेमनवपंकजपुंजकांति पर्युल्लसन्नखमयूखशिखाभिरामौ पादौ पदानि तव यत्र जि

समानजा निवउ ॥ सोनइराकमलतिहांदेवमानलीपरइकरइ तीर्थंकररइस्थवस्थानवकमलसोनारा धर ॥ ३२ ॥ ईयइप्रकारइजिणपरइताहरीतीर्थंकरसंबंधिनीसंपदा ऊइइ देसामान्यकेवलीनाइंइ श्रीआदिनाथ॥

नेंद्र धत्तः पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति॥३२॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र ध

धर्मनाकहिवानाआचारनइविषइदेसनादेधा नाइकाजनहुईतीयइप्रकारअनेरइकोयइनइ एहवीसंपदाहुई ॥ जेहवीकांतिसूरिजनीअतिसयकरीहणउअंधकार रइऊयइतिरधकारइवइऊइसूर्यनीकांतिकरी॥ तेहवीकिहांथकीमंगलादिकसरा आथकांनइइवइ प्रकासवंतथका

र्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य याद्रक् प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा ताद्रक् कुतो ग्रहगण ७

[illegible]

स्यविकाशिनोपि ॥३३॥ श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल मत्तभ्रम द्भ्रमरनादविवृद्धको

[illegible]

पं ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं दृष्ट्वाभयंभवतिनोभवदाश्रितानां ॥३४॥ भिन्नेभकुंभग

[illegible]

लदुज्वलशोणिताक्तं मुक्ताफलप्रकरभूषितभूमिभागः बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपो

[illegible]

पि नाक्रामतिक्रमयुगाचलसंश्रितंते ॥३५॥ कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं दावा १७

[illegible]

नलंज्वलितमुज्वलमुत्स्फुलिंगं विश्वंजिघत्सुमिवसंमुखमापतंतं त्वन्नामकीर्तनज

[illegible]

लं शमयत्यशेषं ॥३६॥ रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फण

[illegible]

मापतंतं आक्रामतिक्रमयुगेन निरस्तशंकः त्वन्नामनागदमनीहृदियस्यपुंसः ॥

[illegible]

॥३७॥ वल्गत्तुरंगगजगर्जितभीमनाद माजौबलंबलवतामपिभूपतीनां उद्यद्दिवा

कांतिनी शिखाइ तीणइ करी हणीउ || ताहरा स्मरणथी एहवउ बलावलउ जेसं || ३८ बरछीने आगलइ भाजी आणी तीणइ लोहीजे
थकउ अंधकार एह बीजे संग्राम नो सैन्य ग्राम ते मांहे [illegible] नाम अपतीसय नहोइ हाथी तीयां रतनो [illegible] पाणी तीयं

करमयूखशिखापविद्धं। त्वत्कीर्तनात्तम इवाशुभिदामुपैति।।३८।। कुंताग्रभिन्नगजशो

नइ वाहलउ || जे वेगनी आइ रतउ जे उतारती आइ नइ तरि | एहवउ जे संग्राम तेहनइ विषइ जय पामइ जीता [illegible] ताहरा
[illegible] ताइ रनो वानइ विषइ आतुर जे सुभट तीणे बीहा मणउ।। जीपीयइ जे वयरी तेहना पक्ष जीतइ एहवउ जे संग्राम || चरणकमल

णितवारिवाह। वेगावतारतरणातुरयोधभीमे। युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा। स्त्व

रूप वन नउ आश्रय करणहार ते लहइ सत्य || ३९ || समुद्र नइ विषइ [illegible] जे मीन मगर जलचर जीव || बडी आग मछ
नउ पक्षइ विकराल संग्राम वसेन।। [illegible] तेह नीय चित्त तेह नास पडइ।। | मोटा मछ नी जाति

त्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते।।३९।। अंभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र। पाठीनपी

[illegible] मच्छ नी जाति महा भयनउ देणहार | [illegible] ते कल्लोल [illegible] तीयां नइ || ताहरइ जो भीकरी नइ ताहरा स्मरण
उत्कट [illegible] वाडवानल जेहनइ विषइ || विषइ जे वहाण जीयां [illegible] मनुष्य [illegible] आश्रय नइ आपण इघरे जायइ

ठभयदोल्बणवाडवाग्नौ। रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा। स्त्रासं विहाय भवतः स्म ८

-मार

एहवा बंकी तीसमु || ४० [illegible] मुगलोदर नामा रोगनी [illegible] | सोचवनी आवस्था | [illegible] जीववानी [illegible]
[illegible] नइ भारइ करी [illegible] नामा आवस्था | [illegible] | [illegible] ताहरा चरण
कमलनउ

रणाद्व्रजंति।।४०।। उद्भूतभीषणजलोदरभारभुग्नाः। शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।

[illegible] अमृत तीणइ करी [illegible] रोग वया || मनुष्य [illegible] कंदर्प नामा देवता तीयां सरीसो || ४१ पगथी मांडी गलाइ
[illegible] सरीर एहवा [illegible] सर्व रोग नासइ रोग [illegible] रूप जीयां [illegible] ते एहवा थाइ।। मोटी सांकलइ

त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा। मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः।।४१।। आपादकं

वींटाणा छइ सरीर जीयां रउ || [illegible] मोटा [illegible] नइ [illegible] | ताहरा नाम मंत्र रूप निरंतर स्मरण मा
[illegible] मनुष्य कष्ट मेघा करी घसी [illegible] जांघ जीयां री [illegible] मनुष्य [illegible] ता [illegible]

ठमुरुशृंखलवेष्टितांगा। गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजंघाः। त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः

तीयां [illegible] | [illegible] बंधन तणउ डर [illegible] || ४२ | मत वाला [illegible] हाथी | सामुद्र [illegible] | दवानल अग्नि नो |
नासइ तीयां मनुष्यां नइ राजादिकना बंधना तणउ भाय इ।। नउ [illegible] १ सी ह नो [illegible] २ [illegible] ३ | तीजो

स्मरंतः। सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति।।४२।। मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि।

9

...संग्रामवारिधि ... । ... ।
...तेजवालउविनासणमहारुद्र आथइ । मृगेंद्रका ... जिको ... ॥ स्तवनपदमातस्तवनामहुं ... पढइ ... ॥

संग्रामवारिधिमहोदरबंधनोत्थं तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव । यस्तावकं स्तवमिमं

... ॥ ४३ ॥ स्तोत्रकुपमालाउतडा ... एकरीगूंथीलइ जिका ॥ ... प्रकारक्रलत्वइ जीयइमालानइविषइ ॥

मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्र

... ॥ ... ॥ ... ॥

पुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥४४॥

... श्रीमानतुंगसूरि ... । गुणे निबद्धां ... रुचिरवर्णकई ... । इति श्री भक्तामरस्तोत्रार्थ ॥ ...

इति श्री मानतुंगाचार्यविरचितं भक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥ लि० सं० १७६५ वर्षे